ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड V अंक 10 जनवरी 2014

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- पोल्ट्री कूड़े से खाद
- महीने के कृषिउद्यमी श्री के. परमेश्वरम
- महीने का संस्थान - एसएफआरडीटी, करूर तमिलनाडु
- जैव अपशिष्टसे प्रोटीन तैयार

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

'पोल्ट्री कूड़े' से खाद फसलों के लिए अद्भुत काम करता है- कृषिउद्यमी श्री. सुरेश कुमार एरोबिक किण्वन प्रौद्योगिकी विकसित करते हैं

शहरीकरण के कारण सिकुड़ती कृषि भूमि के मुद्दे से निपटने के लिए सरकार ने उच्च प्रौद्योगिकियों को शुरू कर खेती के सीधे विकास की आवश्यकता को महसूस किया। (सार्वजनिक - निजी भागीदारी विधा) में कृषि प्रौद्योगिकी को जमीनी स्तर तक ले जाने के लिए सरकार ने पेशेवर कृषिकों को प्रशिक्षित करने और के लिए 2002 में नाबार्ड और कृषि विस्तार प्रबंधन के राष्ट्रीय संस्थान (मैनेज), हैदराबाद के साथ समन्वय में एग्री-क्लीनिक एवं कृषि-व्यापार केन्द्रों की अवधारणा शुरू की। हरितम होर्टी एक ऐसी एग्री क्लिनिक है जिसे 2003 में श्री आर सुरेश कुमार ने विजयवाड़ा शहर में स्थापित किया। यह क्लिनिक मिट्टी तथा पानी के परीक्षण और उचित मूल्य पर जैव कीटनाशकों को बढ़ावा देने के अलावा कृषि प्रणालियाँ में कृष्णा, गुंटूर और पश्चिम गोदावरी जिलों के किसानों को तकनीकी सहायता प्रदान करता है। श्री सुरेश कुमार ने एक चयनात्मक माइक्रोबियल संस्कृति के साथ पोल्ट्री-कूड़े के एरोबिक किण्वन की तकनीक भी विकसित की है। हरिताम होर्टी द्वारा उत्पादित पोल्ट्री खाद जब सभी फसलों पर उपयोग की गई तो इसमें अन्य खादों से बेहतर परिणाम पाए गए।

"धान में दो साल के लिए पोल्ट्री खाद के लगातार उपयोग द्वारा, एनपीके रासायनिक उर्वरकों तीसरे मौसम से रोका जा सकता है। पैदावार अपेक्षाकृत कम कीटों सहित एनपीके प्रयोग क्षेत्र के समतुल्य है। "उत्पादन की गुणवत्ता भी अच्छी है" किसान वाई.एस.एस. मुखर्जी कहते हैं। श्री सुरेश कुमार ने कहा "पूरी खाद प्रक्रिया में 25 से 30 दिन लगते हैं। इस तकनीक के उपयोग को स्वीकार करते हुए नाबार्ड ने ग्रामीण अभिनव कोष योजना के तहत खाद संस्कृति के उत्पादन के लिए एक सूक्ष्म प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए धनराशि दी तथा व्यवसायिक रूप से उत्पादन 2012 में शुरू हुआ।" खाद का उपयोग करने वाले कई किसान और पोल्ट्री किसान अब स्वयं ही 1500/- रुपये प्रति टन की लागत से खाद का उत्पादन कर रहे हैं। वे कहते हैं, "एक किलोग्राम खाद बनाने के लिए एक टन पोल्ट्री कूड़े की आवश्यकता है. पोल्ट्री खाद के अनुप्रयोग से रासायनिक उर्वरकों का उपयोग 25% से अधिक की कमी हुई है।" रमेश बाबू, एक पोल्ट्री सलाहकार कहते हैं, "पोल्ट्री कूड़े में अणुजीव संस्कृति के प्रयोग ने मुर्गी के शेड से आनेवाली कूड़े की बुरी गंध की प्रमुख समस्या को प्रभावी ढंग कम किया है।" कृष्णा और पश्चिमी गोदावरी जिलों में कई पोल्ट्री किसानों अपने पोल्ट्री शेड में यह प्रयोग कर रहे हैं।

(स्रोत-हिन्दू, दिनांक-2013/07/08)

पेज- 4 पर जारी.....

कृषिउद्यमी श्री के. परमेश्वरम ओडांचात्रम के प्याज उत्पादकों के लिए खुशियां लाए

कृषिउद्यमी के. परमेश्वरम एक सेवानिवृत्त कृषक कहते हैं, "अपने कार्यकाल के दौरान मैंने लालची निजी कंपनियों और बीज डीलरों के माध्यम से नकली आदानों लगातार आपूर्ति की जाती हुई देखी। मैं अपने शोध अनुभवों का योगदान कृषक समुदाय को मूल और शुद्ध रूप में गुणवत्ता बीजो की किस्में प्रदान करके करना चाहता था। मैं हमेशा एक शोधकर्ता व कृषिउद्यमी बनना चाहता था; लेकिन विभिन्न पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण, मैं जोखिम नहीं ले सका।" राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास फाउंडेशन, तमिलनाडु से वर्ष 2010 में स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के बाद श्री के. परमेश्वरम तमिलनाडु के डिंडीगुल जिले में अपने पैतृक स्थान ओडांचात्रम लौटे और प्याज, मिर्च तथा सहजन की फसलों पर अनुसंधान शुरू कर दिया

प्रारंभ में उन्होंने प्याज की नई किस्म विकसित करने के लिए अपना अनुसंधान शुरू किया। अपने खेतों में हर प्रकार की सब्जियां उगाने की योजना बनाने के लिए वे अपना अधिकतम समय खेतों में ही व्यतीत करते थे। तत्पश्चात् उन्होंने अपने पड़ोसी किसानों को सब्जियों की वैज्ञानिक खेती पर सुझाव देने शुरू कर दिये। किसानों ने पाया कि नई तकनीक बेहतर परिणाम दे रही है। श्री परमेश्वरम को कुछ राशि भुगतान करके किसानों ने परामर्श का लाभ उठाना शुरु किया। परामर्श सेवाओं में व्यावसायिकता लाने के लिए उन्हे एहसास हुआ कि इसमें व्यापार कौशल की कमी है और ऐसे कौशल प्राप्त करने के लिए उन्होंने वैकल्पिक स्कूलों खोज शुरू कर दी। उन्होंने स्वैच्छिक पीपुल्स सर्विसेज एसोसिएशन (वीएपीएस), मदुरै, तमिलनाडु के द्वारा एसी और एबीसी प्रशिक्षण के लिए विज्ञापन देखा। वे इस योजना के मिलने वाले लाभ से प्रेरित हुए, कार्यक्रम में हिस्सा लिया और इसे सफलतापूर्वक पूरा किया।

प्रशिक्षण पूरा होने के बाद उन्होंने अपनी छोटी सी दुकान का के.आर. एग्रो फार्म कंसल्टेंसी सर्विसेज नाम से पंजीकरण करवाया। उन्होंने सब्जियों की फसलों की वैज्ञानिक खेती पर प्रशिक्षण का आयोजन शुरू कर दिया और अपने शोध को बी जीरी रखा। श्री परमेश्वरम प्याज की फसल के चयन के पीछे कारण बताया, "छोटा प्याज की किस्म (सांभर प्याज) तमिलनाडु में प्रसिद्ध है और जिसे क्षेत्र को मैनें प्याज अनुसंधान के लिए चुना है वह मुख्य प्याज उत्पादन क्षेत्र है। छोटा प्याज की कीमतों से उपभोक्ताओं को आँसू ला सकते हैं, लेकिन पिछले तीन से पांच वर्ष में प्याज की बढ़ती कीमतों ने हमेशा जिले में इस फसल की खेती में लगे हुए किसानों को खासा मुनाफा दिया है।" तीन वर्ष के अनुसंधान के प्रयासों के परिणामस्वरूप SRIKA -1 नाम की नई किस्म मीली, जो द्वि मौसमी है और प्रति एकड़ 10 टन तक उत्पादन किया जा सकता है

श्री सुब्रमण्यम के पुत्र श्री एस. सुरेश, तमिलनाडु के तिरपुर के पल्लाडैम के कलाकिनारू, पुदुर के निवासी हैं। उन्होंने के.आर. एग्रो फार्म और कंसल्टेंसी सर्विसेज से SRIKA-1 प्याज बीज खरीदा। 2013 के खरीफ के मौसम में उन्होंने श्री परमेश्वर के वैज्ञानिक मार्गदर्शन में बीज बोया। उन्होंने प्रति एकड़ 10.000 यानी (10 टन/एकड़) की रिकॉर्ड तोड़ उपज हासिल की। श्री सुरेश के प्रति एकड़ 5,00,000 / - रुपये का शुद्ध लाभ मिला। एक स्थानीय समाचार चैनल, राज टीवी किसान से साक्षात्कार लिया और सफलता की कहानी राज्य भर में प्रसारित की। तमिल मासिक बुलेटिन पसुमई विकटन कृषक समुदाय के लिए विशेष रूप से प्रकाशित किया गया, साथ ही 25-11-2013 में प्याज किस्म SRIKA-1 पर लेख प्रकाशित किया गया। SRIKA-1 प्याज की किस्म तमिलनाडु में दिन प्रतिदन लोकप्रिय हो रही है।

के.आर. कृषि फार्म की प्रमुख गतिविधियों हैं:

•बीज उत्पादन और प्याज, सहजन और क्लस्टर सेम का गुणन •बीज, खाद और पौध संरक्षण रसायन इत्यादि के रूप में गुणवत्ता आदानों की आपूर्ति •फसल उत्पादन तकनीक पर कंसल्टेंसी।

के.आर. कृषि फार्म के माध्यम से बीज किस्मों और आदानों की आपूर्ति दिन ब दिन लोकप्रिय हो रही है। किसानों से लगातार मांग में पूर्व-मौसमी बैठकों, क्षेत्रीय दौरों, क्षेत्र का दिन उनकी सफलता की कुंजी हैं। 50 गांवों से 2500 से अधिक किसान कंपनी के नियमित ग्राहक हैं। कंपनी का सालाना कारोबार 10 रुपये करोड़ है। चार कुशल लोग कंपनी के पूर्णकालिक कर्मचारी हैं। SRIKA-1 प्याज किस्म के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृषिउद्यमी के. परमेश्वरम को के.आर. कृषि फार्म, 36 सी 1/3, डिंडीगुल मेन रोड, चेक पोस्ट, ओडांचात्रम, डिंडीगुल जिला, तमिलनाडु - 624619 पर संपर्क किया जा सकता है। ईमेल आईडी: kragrofarm@rediffmail.com मोबाइल नंबर: 09843907878

ग्रामीण विकास एवं प्रशिक्षण के लिए सरस्वती फाउंडेशन (SFRDT)करूर, तमिलनाडु कृषि उद्यमिता विकास के क्षेत्र में श्रेष्ठता प्रदान करना

एसआरडीएफ, कुरुर, तमिलनाडु के अध्यक्ष ने कहा, "हम परिणाम उन्मुख, कृषि के विशेष अभियान को प्रोत्साहित करने वाली गैर लाभकारी प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध एनजीओ तथा ग्रामीण विकास एवं प्रशिक्षण का सच्चा प्रतिनिधित्व करते हैं। कृषि समुदाय के फायदे के ले हनमे नियमित तौर पर विभिन्न कल्याण कार्यक्रमों का आयोजन किया।" कृषि विज्ञान केन्द्र एनजीओ का एक प्रमुख कार्यक्रम है। कृषि विस्तार प्रबंधन के राष्ट्रीय संस्थान (मैनेज), भारत सरकार की एक संस्था ने एसी और एबीसी योजना को लागू करने के लिए केवीके को एक नोडल प्रशिक्षण संस्थान (एनटीआई) रूप मान्यता दी है। यह एग्री क्लीनिक एवं कृषि व्यापार केन्द्र योजना के तहत प्रशिक्षण प्रतिभागियों के लिए व्यावहारिक अनुभव, प्रयोगशाला सेवाएं और इंटरनेट की सुविधा प्रदान करता है।

मिशन: सक्षम कृषिउद्यमि के आविर्भाव को सुविधाजनक बनाने मे एक मुख्य स्रोत बनना, जो कृषि के विकास और संबद्ध क्षेत्रों में उद्यमशीलता शिक्षा, प्रशिक्षण और सतत समर्थन के माध्यम से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

विजन: कृषि उद्यमिता विकास, एग्री क्लीनिक एवं कृषि व्यापार सेक्टर के क्षेत्र में उत्कृष्ट केन्द्र बनना।

एसी और एबीसी गतिविधियों से संबंधित एनटीआई की मुख्य उपलब्धियों: नोडल प्रशिक्षण संस्थान ने अब तक 3 बैच के 86 उम्मीदवारों का प्रशिक्षण के पूरा किया। समाज के कमजोर वर्गों को विशेष रूप से दो व्यावसायिक धारा उम्मीदवारों को निशाना बनाया गया है एनटीआई की प्रमुख उपलब्धियों में से एक यह है कि इसने समाज के कमजोर वर्ग, विशेष रूप से +2 व्यावसायिक धारा के उम्मीदवारों (79%) को लक्षित किया है, जो बीपीएल वर्ग के हैं। एनटीआई की कुल सफलता दर 49% है। उम्मीदवारों ने स्वयं के संसाधनों के साथ अपनी इकाइयों की स्थापना की है। वाणिज्यिक बैंकों से ऋण प्राप्त करने के लिए भी अपनी विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया में हैं।

एसी और एबीसी योजना के साथ एसोसिएशन:

मेजबान संस्था, ग्रामीण विकास और प्रशिक्षण के सरस्वती फाउंडेशन ने एसी और एबीसी को अपने महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में से एक माना और इस योजना की सफलता पर पूरा ध्यान दिया। प्रशिक्षण का पहले बैच के अप्रैल 2013 के दौरान शुरू किया गया। नोडल अधिकारी, एनटीआई के कर्मचारी और ट्रस्ट के सलाहकार डा. आर.एम लक्ष्मणन ने नियमित रूप से एसी और एबीसी योजना कार्यशालाओं में भाग लिया और इस योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए सक्रिय रूप से सभी हितधारकों और अन्य NTIS के साथ बातचीत की। नए उद्यम को सफल बनाने के लिए परियोजना की पहचान, विस्तृत परियोजना रिपोर्ट, ऋण के शीघ्र वितरण के लिए बैंक लिंकेज की तैयारी और निरंतर हैंड होल्डिंग समर्थन की सुविधा के साथ उम्मीदवारों पर व्यक्तिगत ध्यान देने के लिए तकनीकी रूप से योग्य कर्मी शामिल हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम केवीके की तकनीकी टीम के साथ अन्य पड़ोसी संस्थानों द्वारा नियंत्रित किया जाता है और उम्मीद्वार क्षेत्रीय नीरीक्षण द्वारा नवीनतम तकनीकी विकास और सफल कृषि उद्यमों के लिए अभिविन्यस्त होते हैं।

एसी और एबीसी योजना को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण विकास एवं प्रशिक्षण के सरस्वती फाउंडेशन की महत्वपूर्ण गतिविधियां:

- स्थानीय प्रिंट मीडिया के माध्यम से एसी और एबीसी योजना के तहत कृषि पेशेवरों के नामांकन के लिए विज्ञापन।
- एसी और एबीसी योजना की ऑल इंडिया रेडियो, त्रिचुरापल्ली स्टेशन के माध्यम से घोषणा से तमिलनाडु के 24 जिलों तक पहुंच।
- कृषि विश्वविद्यालयों माध्यम आयोजिक नौकरी मेले में एसी और एबीसी स्टाल की स्थापना कर उम्मीदवारों की भर्ती।
- एसी और एबीसी योजना के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करने के लिए कृषि कॉलेजों, व्यावसायिक कृषि विद्यालयों, कृषि डिप्लोमा कॉलेजों और कृषि विश्वविद्यालयों के पूर्व छात्रों के साथ नियमित बैठक करना।

जागृति फाउंडेशन के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया संपर्क करें
SFRDT को निम्न पते पर संपर्क किया जा सकता है:
ग्रामीण विकास और प्रशिक्षण के लिए सरस्वती फाउंडेशन, फील्ड यूनिट:
कृषि विज्ञान केन्द्र, पुलुथेरी ग्राम,आर.टी. मलाइ पोस्ट,कुलिथलाई टी.के.,करूर - 621 313 तमिलनाडु
ईमेल: sarasfound@gmail.com , फोन: 097900 20666

(डॉ. जे. दिराविय्म, नोडाल अधिकारी)

जैव अपशिष्ट से प्रोटीन निरूपण

अपने ही तरीके से फर्क करने के जुनून से प्रेरित, पेशेवर कृषक श्री आर सुरेश कुमार का पसंदीदा मनबहलाव विजयवाड़ा शहर में हरितम होर्ती एवं एग्री क्लिनिक में अपने छोटे प्रयोगशाला टेस्ट ट्यूब और जैव अपशिष्ट पदार्थों के साथ छेड़छाड़ जिसने उनकी क्लिनिक में केरातिन निकासी में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की। श्री कुमार ने मानव बाल और पक्षी के पंख से केरातिन प्रोटीन की निकासी के लिए एक तकनीक विकसित की है, जो नगर निगम के अधिकारियों को बड़ी पर्यावरणीय समस्या बने इस तरह के कचरे के निपटान की समस्याओं से बचा सकता है। इस किफायती प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के लिए अब उन्होंने एक मिशन पर शुरू किया है। कच्चे माल के रूप में इन दोनों का उपयोग कर कृषि क्षेत्र के लिए विकसित प्रोटीन निर्माण ने संयंत्र चयापचय और खेत की उपज में सुधार लाने में आश्चर्यजनक परिणाम दिये। उत्पाद सभी फसलों पर 2008 के बाद से उपयोग में किया गया है और किसान खुशी-खुशी अपने खेतों पर बार-बार इसका प्रयोग कर रहे हैं। "फसलों पर इस उत्पाद के छिड़काव से पत्ती के एक चमकदार स्पर्श के अलावा पत्ती के आकार और मोटाई में वृद्धि देखी गई। कई सहायक कलियों के परिणामस्वरूप अतिरिक्त साइड बार्नेकल मिले। यहां तक फूलों का आकार भी अपेक्षाकृत बड़ा हुआ।

किस्टीन अमीनो एसिड की मौजूदगी से, कार्बनिक सल्फर के मुख्य आपूर्तिकर्ता ने, उत्पादन की गुणवत्ता में इजाफा किया है, " यह गुंटूर जिले के भारतीय स्टेट बैंक, सथेनापल्ली शाखा के पूर्व मुख्य प्रबंधक श्री वी. वेंकट राव,. जो अब जैविक खेती करते हैं, का कहना है। श्री सुरेश कुमार की खोज को कपास, मिर्च और धान की फसलों पर सफलतापूर्वक आजमाया गया है।

(स्रोत - हिंदू - तिथि - 2013/08/08)

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

एग्री क्लीनिकों तथा एग्रीबिजनेस केंद्रों के संबंध में अधिक स्पष्टीकरण के लिए कृपया इस पते पर मेल करें। indianagripreneur@manage.gov.in

"प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि"

महानिदेशक, द्वारा प्रकाशित

हमसे संपर्क करें :

कृषि उद्यमिता विकास केन्द्र, (सीएडी)
कृषि विस्तार प्रबंधन के राष्ट्रीय संस्थान
(मैनेज), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद
पिन-500 030, भारत
ई मेल: indianagripreneur@manage.gov.in
वेबसाइट: www.agriclinics.net
हेल्पलाइन नं. : 1800 425 1556 (टोल फ्री)

प्रमुख संपादक : श्री वी. श्रीनिवास, आईएएस

संपादक : डा. पी. चंद्रशेखर

सहायक संपादक : डा. लक्ष्मीमूर्ति

सुश्री ज्योति सहारे